



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

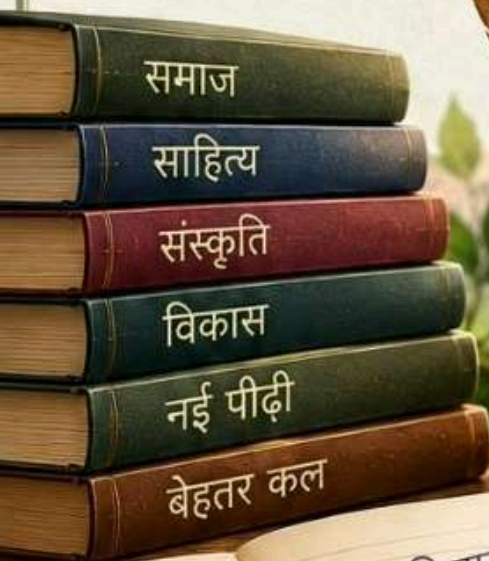
शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...



रचनाकार :-
आनंद पाण्डेय

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - आनंद पाण्डेय

"आज की सबसे बड़ी विकराल समस्या"



"आज की सबसे बड़ी विकराल समस्या"

"जीवित वैधव्य - जब साँसें साथ हों पर धड़कनें अलग हो जाएं!"

हर स्तुति में देवी, हर विलाप में अबला। यह आसान है। कठिन है दर्पण के सामने खड़े होकर पूछना - इस वैधव्य की पहली ईंट मैंने ही कब रखी थी?

जीवित वैधव्य आकस्मिक वज्रपात नहीं। यह बूँद-बूँद सींचा गया विषवृक्ष है। इसका बीज उसी दिन पड़ जाता है जिस दिन हम की जगह में सिंहासन पर बैठ जाता है।

आज की सबसे बड़ी विकराल समस्या यही है। तलाक के कागज पर हस्ताक्षर नहीं हुए, पर रिश्ता कब का खत्म हो चुका है। एक ही छत के नीचे दो अजनबी। सिंदूर माथे पर है, पर सम्मान की रेखा मिट गई है। मंगलसूत्र गले में है, पर बंधन का भाव मर गया है।

1. अपेक्षाओं का अंधकूप

गृहस्थी समुद्र है। इसमें दोनों को नाविक होना पड़ता है। पर जब एक नाविक कह दे - पतवार भी तू चला, पाल भी तू संभाल, तूफान भी तू झेल, और किनारे पर मेरी आरती भी तू ही उतार - तो दूसरा कब तक खेता रहेगा? वह एक दिन पतवार छोड़ देता है। नाव डूबती नहीं, बस ठहर जाती है। और यही ठहराव जीवित वैधव्य है।

2. शब्दों की चिता

गृहस्थी समुद्र है। इसमें दोनों को नाविक होना पड़ता है। पर जब एक नाविक कह दे - पतवार भी तू चला, पाल भी तू संभाल, तूफान भी तू झेल, और किनारे पर मेरी आरती भी तू ही उतार - तो दूसरा कब तक खेता रहेगा? वह एक दिन पतवार छोड़ देता है। नाव डूबती नहीं, बस ठहर जाती है। और यही ठहराव जीवित वैधव्य है।

3. तुलना का कोढ़

पड़ोसी का पति देखो, कितना कमाता है - यह वाक्य बोलते ही तुमने अपने पति का कत्ल कर दिया। कोई मर्द प्रोजेक्ट बनकर नहीं जी सकता। वह उठता है और चला जाता है - घर में रहते हुए भी। यही जीवित वैधव्य का सबसे क्रूर रूप है।

द्रौपदी ने भी तुलना की थी - अंधे का बेटा अंधा। परिणाम चीरहरण हुआ। सीता ने तुलना त्यागी - तृण सम लंका - तो पूजी गई।

कहानियां जो आसपास हैं

रीमा की कहानी - हर झगड़े में बैग उठाकर मायके। मायका सहारा है, हथियार नहीं। जब घर की बात घर में नहीं सुलझी, पति ने हृदय के द्वार बंद कर लिए।

मीरा की कहानी - रोज शर्मा जी दुबई चले गए। पति ने जोखिम लिया, कर्ज हुआ, अवसाद में चला गया। अस्पताल में जब मीरा ने कहा मुझे दुबई नहीं, तुम चाहिए, तब जाकर लौटा।

तीन रिश्ते टूटे क्योंकि मैं, मेरा हावी था। दो रिश्ते बचे क्योंकि हम, हमारा आ गया।

समाधान - खंडहर से शिखर तक

खंडहर गिन लिए। अब निर्माण की बारी है। कृष्ण ने कहा था - युद्ध से पहले संवाद करो।

पहला कदम - सुनो। शिकायत बाद में, कान पहले खोलो। वो थका आया है। 10 मिनट जुबान पर ताला लगा रहेगा तो क्या बिगड़ेगा? दिन कैसा था? - ये तीन शब्द तीन साल की कलह से भारी हैं।

दूसरा कदम - अहं का विसर्जन। पार्वती हिमालय की पुत्री थीं, राजकुमारी। फिर भी शिव के लिए झुकीं। बोलीं - जन्म कोटि लग रगर हमारी। अहं त्यागा, तो अर्धांगिनी बनीं। शीशम अकड़कर टूट जाता है, बांस झुककर बच जाता है। मेरी गलती थी - ये तीन शब्द ब्रह्मास्त्र हैं।

तीसरा कदम - शब्दों का शहद। तुम कचरा क्यों नहीं फेंकते? ये थाना है। चलो साथ में कचरा फेंक आते हैं, फिर चाय पिएंगे - ये घर है। एक ताना कम, एक तारीफ ज्यादा। रोज का नियम बना लो।

अंतिम संकल्प - डोर उसके हाथ में

एक कागज लो। दो हिस्से करो। एक तरफ लिखो क्या खोया, दूसरी तरफ क्या सीखा। फिर एक छोटा लक्ष्य चुनो - सिलाई, पढ़ाई, नौकरी, बागवानी। गृहस्थी सिर्फ रसोई नहीं, सोच का नाम है।

और फिर शांत मन से एक बात रखो - मैंने भी गलतियां कीं। अब मैं बदलना चाहती हूं। मुझे तुम्हारे साथ की जरूरत है।

यदि संवाद से रास्ता निकला, तो नींव पड़ गई। रोज एक ईंट रखो।
यदि संवाद के बाद भी अपमान मिला, तो समझो यह गृहस्थी नहीं बंधन है। तब सम्मान के साथ दूरी बनाना भी धर्म है। जीते जी घुटने से बेहतर है सिर उठाकर जीना।

घर आपने सजाया था, घर आप ही संवार सकती हैं।
खंडहर को महल बनाने में समय लगता है, पर पहली ईंट आज ही रखनी होगी।

- आनंद पाण्डेय "केवल"



लेखक परिचय

नाम – आनंद पाण्डेय "केवल"

निवास - मुंबई





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ... **आनंद पाण्डेय "केवल"** ... जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

